

बारह भावना

(पं. भूधरदासजी कृत)

राजा राणा छत्रपति, हाथिन के असवार ।
मरना सबको एक दिन, अपनी-अपनी बार ॥१॥
दल बल देवी देवता, मात-पिता परिवार ।
मरती बिरियाँ जीव को, कोई न राखन हार ॥२॥
दाम बिना निर्धन दुःखी, तृष्णावश धनवान ।
कहूँ न सुख संसार में, सब जग देख्यो छान ॥३॥
आप अकेलो अवतरे, मरे अकेलो होय ।
यूँ कबहूँ इस जीव को, साथी सगा न कोय ॥४॥
जहाँ देह अपनी नहीं, तहाँ न अपनो कोय ।
घर संपति पर प्रकट ये, पर हैं परिजन लोय ॥५॥
दिपै चाम चादर मढ़ी, हाड़ पींजरा देह ।
भीतर या सम जगत में, और नहीं घिन गेह ॥६॥
मोह-नींद के जोर, जगवासी घूमें सदा ।
कर्मचोर चहुँ ओर, सरवस लूटैं सुध नहीं ॥७॥
सतगुरु देय जगाय, मोह-नींद जब उपशमै ।
तब कछु बनै उपाय, कर्म-चोर आवत रुकैं ॥८॥
ज्ञान-दीप तप तेल भर, घर शोधै भ्रम छोर ।
या विधि बिन निकसैं नहीं, बैठे पूरब चोर ॥
पंच महाव्रत संचरन, समिति पंच परकार ।
प्रबल पंच इन्द्रिय-विजय, धार निर्जरा सार ॥९॥
चौदह राजु उतंग नभ, लोक पुरुष संठान ।
तामें जीव अनादि तैं, भरमत हैं बिन ज्ञान ॥१०॥
धन कन कंचन राजसुख, सबहिं सुलभकर जान ।
दुर्लभ है संसार में, एक जथारथ ज्ञान ॥११॥
जाँचे सुर तरु देय सुख, चिन्तत चिन्ता रैन ।
बिन जाँचै बिन चिन्तये, धर्म सकल सुख दैन ॥१२॥